

अग्र भारत

नई सोच का अखबार

www.agrabharat.in

दैनिक हिन्दी समाचार पत्र



वर्षः 19 | अंकः 153 | आगरा, सोमवार 23 नवम्बर 2026 | पृष्ठः 8 मूल्यः 2.00 रू.

अब पड़ेगी भयंकर ठंड! उप्र, पंजाब समेत कई राज्यों में सर्दी की दस्तक

नई दिल्ली,(ए)। देश के कई राज्यों में मौसम के बदलाव की शुरुआत हो गई है। रविवार की सुबह जहां यूपी, दिल्ली और पंजाब-हरियाणा में कोहरा छाया रहा। वहीं दिन में भी ठंडी हवाएं चलने की संभावना है। राजधानी का न्यूनतम तापमान 14 डिग्री और अधिकतम तापमान 27 डिग्री रह सकता है। एक दिन पहले हवा की गति बेहद कम होने की वजह से प्रदूषण का असर देखा जा रहा है। हालांकि आज हवा की रफ्तार 15 से 20 किलोमीटर प्रतिघंटा रह सकती है। इससे प्रदूषण से राहत मिलने की संभावना है। कई राज्यों में चक्रवात के अकवान के असर की वजह से बारिश का भी अलर्ट जारी किया गया है। मौसम विभाग का कहना है कि कम से कम 10 राज्यों में बारिश हो सकती है। वहीं मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश में भी ठंड बढ़ने के आसार हैं। जम्मू-कश्मीर के ऊंचाई वाले इलाकों में बर्फबारी हो सकती है। मौसम विभाग का कहना है



कि बिहार, झारखंड, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, सिक्किम, मिजोरम और मेघालय में मध्यम से भारी बारिश हो सकती है। पूर्वी उत्तर प्रदेश के कुछ दिलों में भी बूंदाबांधी की संभावना है। फिलहाल दिल्ली और यूपी में ज्यादा बारिश का कोई अलर्ट नहीं है।

उप्र में पारा गिरेगा, बिहार और झारखंड में भी होगा बदलाव

उत्तर प्रदेश में पारा लगातार गिर रहा है। वहीं रात का तापमान 13 डिग्री तक होने की संभावना है। पहाड़ों से आने वाली सर्द हवाएं ठंड में इजाफा करेंगी। मथुरा, अलीगढ़, आगरा, बरेली, पीलीभीत, बतायूं, कानपुर, अयोध्या, बाराबंकी, लखनऊ, गोंडा, बहराइच, वाराणसी में 23 नवंबर को भी सुबह कोहरा छाया रह सकता है। बाकी बारिश की ज्यादा संभावना नहीं है। बिहार और झारखंड के कई जिलों में चक्रवाती तूफान अकवान का असर दिखाई देगा। इस वजह से बारिश की संभावना है। मुंगेर, पश्चिमी चंपारण, गया, कटिहार, अरवल, अररिया, पूर्णिया, किशनगंज, गोपालगंज और जमुई में हल्की से मध्यम बारिश हो सकती है। वहीं झारखंड के गुमला, खूंटी, होलरदगा, रांची, समगेडा, पूर्वी सिंहभूम, गढ़वा, पलामू और लातेहार में हल्की से मध्यम बारिश हो सकती है।

पहाड़ों में बर्फबारी

मौसम विभाग के मुताबिक हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और जम्मू-कश्मीर में ऊंचाई वाले इलाके में बर्फबारी हो सकतीहै। उत्तराखंड के रूद्रप्रयाग, पौड़ी गढ़वाल, पिथौरागढ़, उत्तरकाशी, बागेश्वर, चमोली और नैनीताल में ठंड तेजी से बढ़ेगी। वहीं हिमाचल के कुल्लू, मनाली, सोलन, किन्नौर, चंबा और कांगड़ा में बर्फबारी हो सकती है। मौसम विभाग के मुताबिक पंजाब और हरियाणा में मौसम शुष्क रहेगा। हालांकि कोहरा छाया रहेगा। पुडुचेरी और कराइकल में 22 और 23 नवंबर को हल्की बारिश हो सकती है।

भारत-चीन के बीच टकराव को कम करने के लिए कई मुद्दों पर चर्चा

नई दिल्ली,(ए)। अरुणाचल प्रदेश से सटी सीमा पर कड़ाके की ठंड की शुरुआत से ठीक पहले भारत और चीन के बीच दूसरे दौर की कोर कमांडर स्तर की सैन्य वार्ता पूरी हो गई है। दिवाली के बाद 8 नवंबर को शुरू हुई यह बेहद गोपनीय बातचीत करीब दस दिनों तक चली। इसका मुख्य उद्देश्य सीमा पर बढ़ते तनाव को कम करना और दोनों देशों के बीच संवाद के रास्ते खुले रखना था। इस वार्ता में भारतीय पक्ष का नेतृत्व सेना की तीसरी कोर (स्पीयर कोर) के जनरल ऑफिसर कमांडिंग लेफ्टिनेंट जनरल गिरीश कालिया ने किया। इस कोर का मुख्यालय नागालैंड के दीमापुर के पास रंगापहाड़ में है। उनके साथ चीनी सेना के प्रतिनिधिमंडल के अलावा भारत सरकार के विदेश मंत्रालय का एक प्रतिनिधि भी शामिल रहा।



सूत्रों के मुताबिक, बातचीत सौहार्दपूर्ण माहौल में हुई। इस बैठक का मुख्य उद्देश्य दोनों सेनाओं के बीच संपर्क के नियम तय करना था। इसके अलावा, सीमा के पास सैनिकों के आमने-सामने आने से होने वाले टकराव को टालना भी महत्वपूर्ण था। इस क्षेत्र में दोनों देशों ने बड़ी संख्या में सैनिक तैनात कर रखे हैं। हालांकि, यह अभी स्पष्ट नहीं है कि जिन बातों पर सहमति बनी है उन्हें भीषण सर्दी शुरू होने से पहले जमीन पर लागू किया जा सकेगा या नहीं, क्योंकि इस दौरान वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर सैनिकों के लिए रसद पहुंचाना बेहद कठिन हो जाता है। पूर्वी सेक्टर में भारत और चीन के बीच पहले दौर की कोर कमांडर स्तर की वार्ता इसी साल 6 और 7 सितंबर को वाचा-दमाई बॉर्डर मीटिंग पॉइंट पर हुई थी। किबिथू सेक्टर में स्थित वाचा भारत का सबसे पूर्वी सीमा पर मीटिंग पॉइंट है। यह बैठक ऊपरी सुबनसिरी जिले के ताकसिंग इलाके में तनाव की खबरों के बाद बुलाई गई थी। इससे पहले अगस्त में राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल और चीनी विदेश मंत्री वांग यी ने बीजिंग में सीमा विवाद को लेकर विशेष प्रतिनिधियों की बैठक की थी। सीमा पर विवाद का एक बड़ा कारण 1914 में ब्रिटिश भारत और तिब्बत के बीच तय हुई मैकमोहन रेखा को चीन द्वारा मान्यता न देना है। अक्टूबर में भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (आईटीबीपी) के महानिदेशक शत्रुजीत कपूर ने कहा था कि अरुणाचल प्रदेश में कई स्थानों पर भारतीय और चीनी सैनिकों का आमना-सामना हुआ है। इस पर विदेश मंत्रालय ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा था कि जब चीनी सैनिक तय गश्त के नियमों से भटकते हैं तो एलएसी पर स्थिति समय-समय पर बिगड़ जाती है। मंत्रालय ने यह भी दोहराया कि द्विपक्षीय संबंधों के समग्र विकास के लिए सीमावर्ती इलाकों में शांति और स्थिरता बनाए रखना जरूरी है।

तमिलनाडु में वीएस बाबू के निधन से खाली हुई कोलाथुर सीट से स्टालिन लड़ेंगे चुनाव?

नई दिल्ली,(ए)। तमिलनाडु की कोलाथुर विधानसभा सीट पर उपचुनाव की संभावना के चलते राजनीति हलचल तेज हो गई है। इस सीट से विधायक रहे वीएस बाबू के निधन के बाद यह सीट खाली हुई है। अब सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या डीएमके प्रमुख और पूर्व सीएम एमके स्टालिन एक बार फिर इसी सीट से चुनाव लड़ सकते हैं। विधानसभा चुनाव में वीएस बाबू ने स्टालिन को हराकर बड़ा राजनीतिक उलटफेर किया था।

कोलाथुर सीट लंबे समय तक एमके स्टालिन का मजबूत राजनीतिक क्षेत्र रही है। वह 2011 से लगातार इस सीट का प्रतिनिधित्व कर रहे थे, लेकिन हालिया विधानसभा चुनाव में विजय की पार्टी टीवीके के उम्मीदवार वीएस बाबू ने उन्हें 8,795 मतों से पराजित कर दिया था। इस हार के साथ स्टालिन का लगातार जीत का सिलसिला टूट गया। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक वीएस बाबू के निधन के बाद यह सीट फिर से चुनावी



मुकाबले का केंद्र बन गई है। डीएमके के कुछ नेताओं और कार्यकर्ताओं की इच्छा है कि स्टालिन उपचुनाव में दोबारा इस सीट से मैदान में उतरें। पार्टी के सांसद सी रविंदन ने भी कहा है कि कार्यकर्ता अपने नेता को कोलाथुर से चुनाव लड़ते देखना चाहते हैं।

हालांकि, उन्होंने स्पष्ट किया कि इस बारे में अंतिम फैसला स्टालिन को ही करना है। आगामी उपचुनाव डीएमके और टीवीके दोनों के लिए अहम माना जा रहा है। डीएमके के पास इस सीट के जरिए अपनी खोई राजनीतिक जमीन वापस पाने का अवसर होगा। यदि स्टालिन खुद चुनाव लड़ते हैं और उन्हें फिर हार का सामना करना पड़ता है, तो इसका राजनीतिक असर उनकी पार्टी पर पड़ सकता है। दूसरी ओर टीवीके के लिए अपनी पिछली जीत को दोहराना चुनौती होगी। विधानसभा चुनाव में मिली बड़ी जीत के बाद उपचुनाव से यह भी पता चलेगा कि विजय की पार्टी अपना जनसमर्थन बनाए रखने में कितनी सफल रही।

बगैर ब्रेक के 463 किमी तक दौड़ती रही वंदे भारत ट्रेन!

नई दिल्ली(ए)। भारतीय रेलवे में सुरक्षा को लेकर एक बेहद गंभीर लापरवाही सामने आई है। अक्टूबर महीने में एक खाली वंदे भारत ट्रेन का रैक खराब ब्रेकिंग सिस्टम के बावजूद झारखंड से उत्तर प्रदेश तक करीब 463 किलोमीटर का लंबा सफर तय करता रहा। हैरानी की बात यह है कि रास्ते में लोको पायलटों की बार-बार की चेतावनी के बाद भी ट्रेन को नहीं रोका गया। मामला उजागर होने के बाद दक्षिण पूर्व रेलवे जोन ने इसे एक बड़ी सुरक्षा में लापरवाही मानते हुए विस्तृत जांच के आदेश दिए हैं। यह घटना 24 अक्टूबर की है, जो हाल ही में असम में हुई कोलकाता-सैरंग एक्सप्रेस के पटरी से उतरने की दुर्घटना से ठीक कुछ दिन पहले हुई थी, जिसमें भी इसी तरह की लापरवाही के आरोप लगे थे।

रेलवे अधिकारियों के अनुसार, इस खाली वंदे भारत चेयर कार वाले रैक को एक मालगाड़ी के इंजन की मदद से झारखंड के हटिया से उत्तर प्रदेश के झांसी ले जाया जाना था। नियमों के मुताबिक, पूरे सफर के लिए पैसेंजर ट्रेन के ब्रेकिंग सिस्टम को मालगाड़ी के इंजन के ब्रेकिंग सिस्टम से पूरी तरह जोड़ा (इंटीग्रेट) जाना अनिवार्य था, लेकिन संबंधित रेलकर्मियों ने इस आवश्यक एकीकरण की अनदेखी कर दी। दक्षिण पूर्व रेलवे जोन ने इस चूक को बेहद गंभीर बताते हुए कहा है कि पर्याप्त ब्रेक पावर के बिना ट्रेन चलाना सुरक्षा के लिए बड़ा खतरा है, जिससे कोई बड़ा हादसा हो सकता है। इससे कर्मचारियों और यात्रियों की जान जोखिम में पड़ सकती है और रेल संचालन की सुरक्षा प्रभावित होती है। जोन ने रांची के मंडल रेल प्रबंधक को इस पूरे मामले की विस्तृत जांच करने का आदेश दिया है। 7 नवंबर को जारी आधिकारिक दस्तावेज में इस लापरवाही की पूरी कहानी दर्ज है। 24 अक्टूबर को हटिया से रवाना होने के बाद हटिया-रांची सेक्शन में पहले लोको पायलट ने तय नियमों के तहत ब्रेक फील और ब्रेक पावर टेस्ट किया। टेस्ट में पता चला कि ट्रेन की ब्रेक पावर बेहद कमजोर और बेअसर है। रांची स्टेशन पहुंचते ही लोको पायलट ने सेक्शन कंट्रोलर और ट्रैक्शन लोको कंट्रोलर समेत संबंधित अधिकारियों को लिखित में इसकी शिकायत दी। लेकिन समस्या को ठीक करने के बजाय ट्रेन को उसी हाल में आगे बढ़ने की अनुमति दे दी गई। आगे मुरी स्टेशन पर जब दूसरे लोको पायलट ने ट्रेन की कमान संभाली, तो उसे भी यही समस्या मिली। उसने भी कंट्रोलर्स को अलर्ट किया और साफ बताया कि प्रेशर रिलीज करने पर भी ब्रेक काम नहीं कर रहे हैं। इसके बावजूद ट्रेन को नहीं रोका गया। रास्ते भर क्रू की चेतावनियों को नजरअंदाज करने के बाद जब यह रैक उत्तर प्रदेश के चंदौली जिले स्थित पंडित दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन पहुंचा, तब जाकर रेलकर्मियों ने इसकी जांच की। जांच में जो सच सामने आया, उसने सबके होश उड़ा दिए- ट्रेन के सभी कोचों के ब्रेकिंग सिस्टम बंद थे, यानी कोचों में ब्रेक काम ही नहीं कर रहे थे। 463 किलोमीटर के इस लंबे सफर के दौरान पूरी ट्रेन सिर्फ इंजन के ब्रेक और रीजेनरेटिव ब्रेकिंग के भरोसे दौड़ती रही।

भारत अब हथियारों का आयातक नहीं, निर्यातक भारतीय हथियारों का मुरीद हुआ फिलीपींस

नई दिल्ली,(ए)। कभी हथियारों के सबसे बड़े खरीदार के तौर पर पहचाना जाने वाला भारत अब पूरी तरह बदल चुका है। आज वह न सिर्फ अपनी रक्षा खुद कर रहा है, बल्कि दुनिया के कई देशों को आधुनिक और घातक हथियार सप्लाई कर रहा है। इस कड़ी में फिलीपींस सबसे बड़ा नाम बनकर उभरा है, जो दक्षिण चीन सागर में चीन की दादागिरी से परेशान है और भारतीय रक्षा उपकरणों का सबसे बड़ा मुरीद बन चुका है। सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल ब्रह्मोस का पहला अंतरराष्ट्रीय खरीदार बनने के बाद, फिलीपींस इसकी शुरुआती तीन बैटरियों के शानदार प्रदर्शन और ऑपरेशन सिंदूर के दौरान युद्धपोतों पर इसकी सटीकता से बेहद प्रभावित है।



अब वह कम से कम छह और ब्रह्मोस बैटरियां खरीदने की तैयारी कर रहा है। इसके अलावा, फिलीपींस की नजर अब भारत के दो और महाविनाशक हथियारों - आकाश एयर डिफेंस सिस्टम और पिनाका मल्टी-बैरल रॉकेट लॉन्चर पर टिक गई है। फिलीपींस अपनी सेना, नौसेना और वायुसेना के लिए पांच से ज्यादा आकाश रेजिमेंट खरीदने की बात कर रहा है ताकि अपने सैन्य ठिकानों की हवाई सुरक्षा पुख्ता कर सके। ब्रह्मोस दुनिया की सबसे तेज सुपरसोनिक क्रूज मिसाइलों में से एक है, जो जमीन, समंदर और हवा से पलक झपकते ही दुश्मन को तबाह कर सकती है। आकाश एक स्वदेशी एयर डिफेंस सिस्टम है, जो फाइटर जेट और ड्रोनों जैसे हवाई खतरों को हवा में ही ढेर कर सकता है। वहीं, पिनाका रॉकेट लॉन्चर कुछ ही सेकंड में रॉकेटों की बारिश कर दुश्मन के ठिकानों पर भारी तबाही मचा सकता है। हथियारों की खरीद-फरोख्त से आगे बढ़कर, अब दोनों देश डिफेंस मैनुफैक्चरिंग में भी हाथ मिला रहे हैं। भारत की दिग्गज कंपनी एमकेयू फिलीपींस में बुलेटप्रूफ जैकेट बनाने की एक फैक्ट्री लगाएगी। यह लगभग 1,400 करोड़ रुपये के एक बड़े ऑर्डर का हिस्सा है, जिसकी आखिरी खेप का निर्माण स्थानीय स्तर पर होना है। फिलीपींस भारत से हेलीकॉप्टर खरीदने की संभावनाओं पर भी शुरुआती बातचीत कर रहा है।

इस बढ़ती दोस्ती का एक और बड़ा पहलू अंतरिक्ष सहयोग है, जहां भारत ने फिलीपींस में ऑब्जर्वेशन स्टेशन बनाने का प्रस्ताव दिया है। इससे फिलीपींस को भारतीय सैटेलाइट्स से मिलने वाली समुद्री निगरानी की सीधी पहुंच मिल जाएगी, जो दक्षिण चीन सागर में चीन की आक्रामकता का मुकाबला करने में मददगार होगी। भारत और फिलीपींस एक विजिटिंग फोर्सेज एग्रीमेंट पर भी काम कर रहे हैं, जो भारतीय सैनिकों को संयुक्त युद्धाभ्यास के लिए फिलीपींस जाने का रास्ता साफ करेगा। यह इस बात का सबूत है कि भारत और फिलीपींस का रिश्ता अब सिर्फ खरीदार और विक्रेता का नहीं, बल्कि एशिया में शक्ति संतुलन बनाने के लिए एक मजबूत रणनीतिक साझेदारी बन रहा है।

2070 तक पाकिस्तान दुनिया का सबसे बड़ा मुस्लिम आबादी वाला देश बन जाएगा

इस सूची में भारत दूसरे स्थान पर होगा, इंडोनेशिया भी छूट जाएगा पीछे

नई दिल्ली,(ए)। पांच दशकों में, दुनिया की आबादी और कई धार्मिक समूहों में बड़े बदलाव देखने को मिलेंगे। 201 देशों के आंकड़ों पर आधारित रिपोर्ट ने भविष्य की धार्मिक जनसांख्यिकी के दिलचस्प और चौंकाने वाले राज खोले हैं। इस रिपोर्ट के मुताबिक साल 2070 तक पाकिस्तान इंडोनेशिया को पीछे छोड़ते हुए दुनिया का सबसे बड़ा मुस्लिम आबादी वाला देश बन जाएगा, जबकि भारत दूसरे स्थान पर रहेगा। रिपोर्ट बताती है कि 2070 तक पाकिस्तान में मुसलमानों की कुल संख्या बढ़कर करीब 46 करोड़ 10 लाख तक पहुंच जाएगी। इस सूची में भारत का नाम दूसरे स्थान पर होगा, जहां मुस्लिम आबादी का आंकड़ा करीब 33 करोड़ 40 लाख के आसपास पहुंचने की उम्मीद है। वहीं पड़ोसी देश बांग्लादेश में भी मुस्लिम जनसंख्या में वृद्धि होगी,



जिससे दक्षिण एशिया वैश्विक मुस्लिम आबादी का सबसे बड़ा गढ़ बनकर उभरेगा। वर्तमान में सबसे ज्यादा मुसलमानों की आबादी इंडोनेशिया में रहती है, लेकिन भविष्य में यह स्थिति बदल जाएगी। भारत में आने वाले कई दशकों तक भारी बहुमत वाला हिंदू राष्ट्र ही बना रहेगा। रिपोर्ट के मुताबिक 2020 से 2070 के बीच भारत में हिंदुओं की कुल आबादी में 17 करोड़ 60 लाख की बढ़ोतरी होगी, हालांकि कुल जनसंख्या में उनकी हिस्सेदारी 79 फीसदी से मामूली रूप से घटकर 76 फीसदी पर आ सकती है। दूसरी ओर, इसी अवधि में भारतीय आबादी में मुसलमानों की हिस्सेदारी 15 फीसदी से बढ़कर 20 फीसदी तक पहुंचने का अनुमान है। जानकारों के मुताबिक यह आंकड़े दर्शाते हैं कि देश की कुल आबादी में तीन-चौथाई से ज्यादा हिस्सा हिंदू समुदाय का ही बना रहेगा। विभिन्न समुदायों की आबादी में आ रहे इस अंतर के पीछे उम्र और प्रजनन दर का सीधा विज्ञान काम कर रहा है। भारत में कुल प्रजनन दर में तेजी से गिरावट आने के बावजूद मुस्लिम समुदाय की औसत उम्र अन्य वर्गों की तुलना में काफी कम है।

जम्मू-कश्मीर हाईकोर्ट की 5 हेक्टेयर से अधिक जमीन पर अतिक्रमण

जम्मू(ए)। जहां आम आदमी की जमीन हड़पने की खबरें आम हैं, वहीं जम्मू-कश्मीर और लद्दाख हाईकोर्ट की 5 हेक्टेयर से अधिक जमीन पर ही अतिक्रमण का सनसनीखेज मामला सामने आया है। यह जमीन हाईकोर्ट के नए परिसर के निर्माण के लिए रायका, जम्मू में आवंटित की गई थी। मामला सामने आते ही हाईकोर्ट ने स्वतः संज्ञान लिया और इसे अतिक्रमण मुक्त कराने के सख्त निर्देश जारी किए। कोर्ट ने जम्मू के उपायुक्त (डीसी) से यह भी पूछा है कि आखिर जमीन के चारों ओर उचित बाड़ क्यों नहीं लगाई गई थी। नए हाईकोर्ट भवन के लिए रायका में लगभग 111 कनाल यानी 5.615 हेक्टेयर भूमि आवंटित की गई थी, जिसके एक बड़े हिस्से पर कब्जा कर लिया गया है।

न्यायमूर्ति रजनेश ओसवाल और न्यायमूर्ति मोहम्मद यूसुफ वानी की खंडपीठ एक जनहित याचिका (पीआईएल) पर सुनवाई कर रही थी, जिसे अर्जुन गंडोत्रा द्वारा दायर किया गया था। पीठ को हाईकोर्ट के रजिस्ट्रार (न्यायिक) द्वारा सौंपी गई एक स्टेटस रिपोर्ट से पता चला कि जम्मू विंग के निर्माण के लिए चिह्नित लगभग 111 कनाल भूमि पर अतिक्रमण हो गया है। हैरानी की बात यह है कि इस जमीन का कब्जा पहले ही हाईकोर्ट को सौंपा जा चुका था। रबी 2026 की खसरा गिरदावरी में यह जमीन विधि, न्याय और संसदीय कार्य विभाग, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू और कश्मीर के कब्जे में दिखाई गई है। सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ता के वरिष्ठ अधिवक्ता सुनील सेठी ने पीठ को बताया कि कोर्ट परिसर के लिए चिह्नित इस जमीन को ठीक ढंग से सुरक्षित नहीं किया गया है।

एक महिला के कारण हम रामकथा में शामिल नहीं हो पाएः भानवी

प्रतापगढ़,(ए)। कुंडा स्थित राजा भैया के बेटी राजभवन में आयोजित श्रीराम कथा के बीच उनकी पत्नी भानवी सिंह का दर्द सोशल मीडिया पर छलक पड़ा है। उन्होंने एक भावुक पोस्ट लिखकर पति और पूरे परिवार के साथ इस धार्मिक अनुष्ठान में शामिल होने की अपनी अधूरी ख्वाहिश बयां की। भानवी सिंह ने आरोप लगाया कि एक अन्य महिला के कारण उन्हें और उनकी दोनों बेटियों को अपने ही घर में आयोजित इस पवित्र रामकथा में शामिल होने का अवसर नहीं मिला। उन्होंने खुद को रघुराज प्रताप सिंह (राजा भैया) की धर्मपत्नी बताते हुए पति के साथ रिश्तों में किसी भी दूरी को अस्वीकार किया। भानवी सिंह ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर अपनी गहरी इच्छा व्यक्त करते हुए कहा,



मेरी भी बहुत इच्छा थी कि इस पावन रामकथा में मैं हुजूर (राजा भैया) के साथ बैठकर पूजा-अर्चना करती और मेरा पूरा परिवार एक साथ इस धार्मिक अनुष्ठान का हिस्सा बनता। अपने दर्द को व्यक्त करते हुए भानवी ने आगे लिखा, दुर्भाग्यवश, जिस अन्य महिला के कारण इतने वर्षों पहले मुझे अपने ही घर से निकाला गया, उसी के कारण आज रामकथा जैसे पवित्र अवसर पर भी मुझे और दोनों बेटियों को अपने घर वापस नहीं आने दिया गया। यह पीड़ा शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। उन्होंने अपनी स्थिति पर जोर देते हुए कहा, मैं हुजूर की धर्मपत्नी हूं और धर्मपत्नी होने के नाते मैं अपने और उनके बीच किसी भी दूरी को स्वीकार नहीं करती। मेरे सनातन धर्म और संस्कारों में विवाह केवल एक सामाजिक बंधन नहीं, बल्कि सात जन्मों का पवित्र संकल्प है। मेरी धार्मिक मान्यताओं में तलाक या डिवोर्स की कोई कल्पना नहीं रही। भानवी ने सार्वजनिक समर्थन के लिए आभार व्यक्त करते हुए कहा, लोगों की इतनी सुंदर, स्नेहपूर्ण और भावुक टिप्पणियाँ पढ़कर मेरा मन भर आता है। जिस अपनत्व और प्रेम के साथ सभी मेरे अपने घर और परिवार में वापस लौटने की कामना कर रहे हैं, वह मेरे लिए किसी आशीर्वाद से कम नहीं है। उन्होंने अपनी प्रार्थना साझा करते हुए कहा, ईश्वर से यही प्रार्थना है कि एक दिन सत्य, धर्म और रिश्तों की पवित्रता की विजय हो तथा मेरे परिवार में पुनः प्रेम, शांति और एकता स्थापित हो। गौरतलब है कि बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री की श्रीराम कथा सुनने को लेकर भानवी कुमारी ने पहले भी अपनी इच्छा जाहिर की थी। उन्होंने सोशल मीडिया पर पोस्ट लिखकर ससुराल जाकर रामकथा सुनने और बाबा बागेश्वर के दर्शन करने की उम्मीद जताई थी। इसके लिए उन्होंने अपने हुजूर यानी राजा भैया से अवसर देने की अपील भी की थी।